

सिद्धि स्वरूप बनने की सहज विधि

सभी मास्टर त्रिकालदर्शी बने हो? त्रिकालदर्शी बनने से कोई भी कार्य असफल नहीं होता। कोई भी कार्य करने के पहले अपने मास्टर त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित होकर कार्य के आदि-मध्य-अन्त को जानकर कर्तव्य करने से सदैव सफलता मिलेगी अर्थात् सफलता मूर्त बन जायेंगे वा सम्पूर्णमूर्त बन जायेंगे। अभी जो गायन है कि योगियों को रिद्धि सिद्धि प्राप्त होती है। वह कौन सी सिद्धि? संकल्प की सिद्धि और कर्तव्य की विधि। इन दोनों से जन्मसिद्ध अधिकार सहज ही पा लेते हो। संकल्प की सिद्धि कैसे आयेगी, मालूम है? संकल्पों की सिद्धि न होने का कारण क्या है? क्योंकि अभी संकल्प व्यर्थ बहुत चलते हैं। व्यर्थ संकल्प मिक्स होने से समर्थ नहीं बन सकते हो इसलिए जो संकल्प रचते हो उसकी सिद्धि नहीं होती है। व्यर्थ संकल्पों की सिद्धि तो हो नहीं सकती है ना। तो संकल्पों की सिद्धि प्राप्त करने के लिए मुख्य पुरुषार्थ यह है – व्यर्थ संकल्प न रच समर्थ संकल्पों की रचना करो। समझा। रचना ज्यादा रचते हो इसलिए पूरी पालना कर उन्हों को काम में लगाना यह कर नहीं सकते हो। जैसे लौकिक रचना भी अगर अधिक रची जाती है तो उनको लायक नहीं बना सकते हैं। इसी रीति से संकल्पों की जो स्थापना करते हो वह बहुत अधिक करते हो। संकल्पों की रचना जितनी कम उतनी पावरफुल होगी। जितनी रचना ज्यादा उतनी ही शक्तिहीन रचना होती है। तो संकल्पों की सिद्धि प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना पड़े। व्यर्थ रचना बन्द करो। नहीं तो आजकल व्यर्थ रचना कर उसकी पालना में समय बहुत वेस्ट करते हैं तो संकल्पों की सिद्धि और कर्मों की सफलता कम होती है। कर्मों में सफलता की युक्ति है – मास्टर त्रिकालदर्शी बनना। कर्म करने से पहले आदि-मध्य और अन्त को जानकर कर्म करो। ना कि कर्म करने के बाद अन्त में परिणाम को देखकर फिर सोचो इसलिए सम्पूर्ण बनने के लिए इन दो बातों का ध्यान देना पड़े।

यह प्रवृत्ति वाला ग्रुप है तो प्रवृत्ति में रहते इन दोनों बातों का ध्यान देने से सर्विसएबुल बन सकेंगे। सर्विस सिर्फ मुख से नहीं होती लेकिन श्रेष्ठ कर्मों द्वारा भी सर्विस कर सकते हो। यह जो ग्रुप आया है अपने को सर्विसएबुल ग्रुप समझते हो? इस ग्रुप में जो अपने को सर्विसएबुल समझते हैं वह हाथ उठाये। अब जिन्होंने सर्विसएबुल में हाथ उठाया है, वह सर्विस में समय निकाल मददगार बन सकते हैं? माताओं की मदद से बहुत नाम बाला हो सकता है। जितने आये हैं उतने सभी हैंड्स सर्विस में मददगार बन जायें तो बहुत जल्दी नाम बाला कर सकते हो क्योंकि युगलमूर्त बन चलने वाले हो इसलिए ऐसे युगल सर्विस में बहुत अपना शो कर सकते हो। ऐसे कर्तव्य करके दिखाओ जो आपके कर्तव्य हर आत्मा को बाप की तरफ आकर्षित करें। माताओं का ग्रुप, सो भी ऐसी मातायें जो कि युगल रूप में चल रही हैं, उनको समय निकालना सहज हो सकता है। अभी भी समय निकालकर आई हो ना। अभी भी आप के पीछे प्रवृत्ति चल रही होगी ना। जैसे यह बात जरूरी समझकर बन्धनों को हल्का कर पहुँच गई हो ऐसे समय प्रति समय अपनी प्रवृत्ति के बन्धनों को हल्का कर सर्विस में जितनी मददगार बनती जायेंगी उतना ही यह हिसाब-किताब जल्दी चुकतू होगा।

तो माताओं को ऐसे मददगार बनने में ही अपनी उन्नति का साधन समझना चाहिए। सुनना और सुनाना दोनों ही अनुभव करना चाहिए। जैसे बाप मददगार बनते हैं वैसे बच्चों को भी मददगार बनना यही मदद लेना है। तो ऐसी इस ग्रुप में शक्ति भरकर जाना जो अपने बन्धनों को हल्का कर सर्विस में मददगार बन सको। नहीं तो इस सब्जेक्ट में अगर कमी रह गई तो फुल मार्क्स कैसे ले सकेंगे। लक्ष्य तो फुल पास होने का रखा है ना इसलिए इस ग्रुप को खास ऐसी-ऐसी युक्तियां रचने की ट्रेनिंग लेकर जाना है। भट्टी से क्या बनकर जाना है, समझा? सर्विसएबुल और मददगार। घर में रहते शक्ति स्वरूप की स्मृति सदैव रहने से कर्म-बन्धन विघ्न नहीं डालेंगे। घर में रहती हो लेकिन शक्ति-रूप के बजाए पवित्र प्रवृत्ति का भान ज्यादा रहता है। प्रवृत्ति में रहते हुए शक्तिपन की वृत्ति कम रहती है इसलिए अब तक जो आवाज़ निकलता है कि कर्म-बन्धन है, क्या करें, कैसे करें, कैसे कर्म बन्धन काटें। यह आवाज़ इसलिए निकलता है क्योंकि शक्तिपन का अलंकार सदैव कायम नहीं रह पाता। तो अब इस भट्टी में अपनी स्मृति और स्वरूप को बदल कर जाना इसलिए दो बातें सदैव याद रखना। एक तो चेन्ज होना है, दूसरा चैलेन्ज करना है। शक्ति रूप में अपनी वृत्ति और स्वरूप को भी चेन्ज करना और जितना-जितना अपने को चेन्ज करते जायेंगे उतना औरों को चैलेन्ज कर सकेंगे इसलिए यह दो बातें याद रखना। जब सुकर्म करते हो तो बाप का स्नेही स्वरूप सामने आता है और अगर कोई विकर्म करते हो तो विकराल रूप सामने लाना चाहिए। आप लोग स्नेही तो हो ना। स्नेही सदैव सुकर्मी होते हैं। कोई भी ऐसा कर्म न हो, यह सदैव स्मृति में रखना क्योंकि आप सभी सृष्टि की स्टेज पर हीरो एक्टर्स हो। तो हीरो एक्टर्स पर सभी की निगाह होती है इसलिए अपने को प्रवृत्ति में रहने वाली न समझ, स्टेज पर हीरो एक्टर समझकर हर कर्म करती चलेंगी तो कोई भी ऐसा कर्म नहीं हो सकेगा।

जैसे साइन्स की परमाणु शक्ति आज क्या से क्या दिखा रही है। वैसे ही साइलेन्स के शक्तिदल में आप प्रवृत्ति में रहने वाली प्रमाण हो। वह परमाणु शक्ति है और आप लोग सृष्टि के आगे एक प्रमाण हो। तो आप भी प्रमाण बनकर बहुत ही सर्विस कर सकती हो। माताओं की तो बहुत मांगनी है। माताओं के कारण कोने-कोने में संदेश फैलाना अभी रहा हुआ है। कई आत्माओं को संदेश न मिलने की ज़िम्मेवारी आप लोगों के ऊपर है इसलिए इस ग्रुप को ऐसा ही तैयार हो जाना है। यह ग्रुप समय प्रति समय सर्विस में मददगार बन सकता है। उम्मीदवार है। जैसे अधरकुमारों का ग्रुप भी बहुत उम्मीदवार ग्रुप था। ऐसे ही यह ग्रुप भी होवन्हार मददगार है। मददगार कैसे बनें उसकी युक्ति भी है लेकिन शक्ति नहीं है। इसलिए अपने स्वरूप परिवर्तन का, अपनी टीचर से सर्टीफिकेट ले जाना। जैसे एक-एक कुमारी 100 ब्राह्मणों से उत्तम गाई हुई है वैसे एक-एक माता जगत् माता है। कहाँ 100 ब्राह्मण कहाँ सारा जगत्। तो किसकी ऊंची महिमा हुई? एक-एक माता जगत् माता बनकर जगत् की आत्माओं के ऊपर तरस, स्नेह और कल्याण की भावना रखो। इसलिए इस ग्रुप को एक वायदा करना है। वायदा करने की हिम्मत है? कौन-सा भी वायदा हो कि सुनने के बाद हिम्मत रखेंगे? सुनने के पहले हिम्मत है वा सुनने के बाद हिम्मत रखेंगे? क्या समझती हो? जो भी वायदा होगा उसकी हिम्मत है? अगर कोई कड़ा वायदा हो तो फिर सोचेंगी ना। हरेक को यह वायदा करना है कि समय प्रति समय मैं सर्विस में मददगार और साथ-साथ शक्ति स्वरूप बन विघ्न-

विनाशक बनकर ही प्रवृत्ति में रहेंगी। सहज वायदा है ना। विघ्नों के आने से चिल्लायेगे नहीं, घबरायेगे नहीं। लेकिन शक्ति बनकर सामना करेंगे। यह वायदा अपने आप से सदैव के लिए करके जाना है।

कोई भी प्रकार की आसक्ति है तो वहाँ ही माया भी आ सकती है। आसक्ति होने के कारण माया आ सकती है। अगर अनासक्ति हो जाओ तो माया आ नहीं सकती। जब आसक्ति खत्म हो जाती है तब शक्तिस्वरूप बन सकते हैं। अपनी देह में वा सम्बन्धों में, कोई भी पदार्थ में कहाँ भी अगर आसक्ति है तो माया भी आ सकती है और शक्ति नहीं बन सकते। इसलिए शक्तिरूप बनने के लिए आसक्ति को अनासक्ति में बदली करो। जैसे आप लोग औरों को कहते हो कि एक दीपक अनेकों को जगा सकता है, ऐसे ही आप एक-एक सारे विश्व के कल्याण के निमित्त बन सकते हो। तो अपने कर्त्तव्य को और अपने स्वरूप को दोनों को याद रखते हुए चलते चलो। ब्रह्मा की भुजायें हो ना। तो हैण्डस बनेंगे ना। अपने को ब्रह्मा की भुजायें समझती हो? ब्रह्मा की भुजाओं का भी कर्त्तव्य क्या होता है? ब्रह्मा का कर्त्तव्य है स्थापना तो ब्रह्मा की भुजाओं का भी कर्त्तव्य हुआ स्थापना के कार्य में सदैव तत्पर रहना। हृद के सम्बन्धों में आने का सिर्फ इन्हों को तरीका सिखाना है। निर्बन्धन अपने को बना सकती हो, लेकिन तरीका नहीं आता है। एक तो तरीका नहीं, दूसरी ताकत नहीं। तो ताकत भी भरना और तरीका भी सीखना। बापदादा फिर भी उम्मीदवार गुप समझते हैं। अब देखेंगे कि हरेक अपने को कितना बार आफ़र करते हैं। अपने आप को खुद ही आफ़र करना है। आफ़रीन उनको मिलती है जो स्वयं को खुद आफ़र करता है। अगर कहने से करते हैं तो आफ़रीन नहीं मिलती है। अब देखेंगे कि कौन-कौन अपने को आफ़र करते हैं। स्नेही तो हो लेकिन स्नेही के साथ सहयोगी भी बनो। इस गुप का नाम क्या रखें? नाम संस्कार होता है ना, क्योंकि परिवर्तन भट्टी में आये हो। आप लोग भी नाम संस्कार के उत्सव में आये हो ना। इस ग्रुप का क्या नाम? यह है सदा सहयोगी और शक्तिस्वरूप गुप। अब अपनी शक्ति कभी भी कम नहीं करना। जब अपनी शक्ति को गंवा देते तो रावण भी देखता है कि यह अपनी शक्ति को गंवा बैठे हैं तो वह खूब रूलाता है। शक्ति गंवाना अर्थात् रावण को बुलाना इसलिए कभी भी अपनी शक्ति को कम न होने देना। जमा करना सीखो। भविष्य 21 जन्मों के लिए शक्ति को जमा करना है। अभी से जमा करेंगे तो जमा होगा इसलिए सदैव यही सोचो कि जमा कितना किया है? अच्छा।

वरदान:- सदा सन्तुष्ट रह अपनी दृष्टि, वृत्ति, कृति द्वारा सन्तुष्टता की अनुभूति कराने वाले सन्तुष्टमणि भव

ब्राह्मण कुल में विशेष आत्मायें वो हैं जो सदा सन्तुष्टता की विशेषता द्वारा स्वयं भी सन्तुष्ट रहती हैं और अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति द्वारा औरों को भी सन्तुष्टता की अनुभूति कराती हैं, वही सन्तुष्टमणियां हैं जो सदा संकल्प, बोल, संगठन के सम्बन्ध-सम्पर्क वा कर्म में बापदादा द्वारा अपने ऊपर सन्तुष्टता के गोल्डन पुष्पों की वर्षा अनुभव करती हैं। ऐसी सन्तुष्ट मणियां ही बापदादा के गले का हार बनती हैं, राज्य अधिकारी बनती हैं और भक्तों के सिमरण की माला बनती हैं।

स्लोगन:-

निगेटिव और वेस्ट को समाप्त कर मेहनत मुक्त बनो।

प्राण अव्यक्त बापदादा का वतन से प्राप्त मधुर सन्देश (गुल्जार दादी जी)

आज बापदादा के पास सर्व समाचार लेते हुए पहुंची। सदा के सदृश्य दूर से ही नयन मिलन और मधुर मुस्कान द्वारा मिलन मनाते सम्मुख पहुंच गई। बापदादा अपने गले लगाते अतिन्द्रिय सुख के झूले में झुला रहे थे। मैं भी लवलीन थी। कुछ समय बाद बाबा बोले, आओ मेरी विश्व उद्धारक बच्ची आओ, क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा विदेश के पांच देश फ्रान्स, इटली, इजराईल, ग्रीस, टर्की सब तरफ के बच्चों की यादप्यार लाई हूँ। क्या बताऊं बाबा आपने तो कमाल की है! अपने बच्चों को कहाँ-कहाँ कोनों से निकाला है। सब बहुत उमंग-उत्साह में अतिन्द्रिय सुख के झूले में झूल रहे हैं। भिन्न-भिन्न भाषा भिन्न-भिन्न मान्यताओं में रहते भी मेरा बाबा कहकर खुशी में एक होकर नाच रहे हैं और अपने सेवा स्थान भी सम्भाल रहे हैं। हमारे अन्दर तो सब तरफ की रिजल्ट देख वाह! बाबा वाह! कमाल है, कमाल है! का आवाज निकल रहा था। इतने में क्या देखा, बाबा के नयनों में सभी तरफ के विशेष भाई-बहनें, सेवाधारी समाये हुए लवलीन थे। बाबा भी हर्षित हो रहे थे।

उसके बाद बाबा को भारत के बच्चों की यादप्यार दी। और सुनाया कि सब तरफ बड़े प्रोग्राम के लिए उमंग-उत्साह से प्लैन बना रहे हैं। बाबा ने सबके प्रति यादप्यार दिया और बोले, अब बापदादा यही चाहते हैं कि मुख की सेवा का प्लैन तो अच्छा बना रहे हैं। बाबा बच्चों पर खुश है। लेकिन अब बापदादा चाहते हैं कि मुख की सेवा के साथ अब हर बच्चा सूक्ष्म वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल को श्रेष्ठ बनाने की भी सेवा करे। हर बच्चा अधिकारी, स्वराज्यधारी बन स्व के शक्तिशाली वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल को शक्तिशाली, शान्तिधारी बनाये, समाप्ति के समय को नजदीक लाये। इसके लिए अब विशेष हरेक को स्वयं प्रति रोज मन का टाइमटेबल बनाना आवश्यक है। मालिक बन अपने सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों, मन-बुद्धि-संस्कार को शक्तिशाली बनाये स्व परिवर्तन से वायुमण्डल शक्तिशाली बनाये, रूहानियत का वायुमण्डल फैलाये, यह स्व का पुरुषार्थ आवश्यक है। और चेकिंग करे कि वायुमण्डल फैलाने का चार्ट ठीक रहा? मन का टाइमटेबल ठीक रहा? चेक करे और चेंज करे। समय की तीव्र गति के साथ स्व के पुरुषार्थ की गति को भी तीव्र करना आवश्यक है। ऐसा आलराउण्ड पुरुषार्थ करना ही है। ऐसे कहते बाबा ने हरेक बच्चे को बहुत-बहुत पदमापदम गुणा यादप्यार देते हमें साकार वतन भेज दिया। ओम् शान्ति।